Rizwan

Package of Practice

Particular	English	Hindi
Crop	**Yard Long Bean**	**Yard Long Bean**
Season/Region	Summer, Rabi, Kharif as per Truthful Label	ग्रीष्म, रबी, खरीफ (ट्रूथफुल लेबल के अनुसार)
Land preparation	Field should be well prepared free from weeds and well drainage facility. 1-2 deep ploughing, Soil should be exposed to sunlight, 3 to 4 rounds of harrows to reach fine tilt. Before final harrow, apply 4 - 5 MT well decomposed FYM/acre along with 250 gm Trichoderma for controlling soil born fungus.	खेत को खरपतवारों से मुक्त और अच्छी जल निकासी की सुविधा के साथ अच्छी तरह तैयार किया जाना चाहिए। 1-2 गहरी जुताई करें, मिट्टी को धूप में खुला रखें, 3 से 4 बार हैरो चलाएँ ताकि मिट्टी अच्छी तरह से झुक जाए। अंतिम हैरो चलाने से पहले, मिट्टी जनित फफूंद को नियंत्रित करने के लिए 4-5 मीट्रिक टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद/एकड़ के साथ 250 ग्राम ट्राइकोडर्मा डालें।
Seed rate & Method	Seed Rate: 4-5 kg per are for Pole Beans, 7-8 kg per acre for other beans. Sowing: Direct in main field.	बीज दर: पोल बीन्स के लिए 4-5 किलोग्राम प्रति एकड़, अन्य बीन्स के लिए 7-8 किलोग्राम प्रति एकड़। बुवाई: मुख्य खेत में सीधे।
Spacing	Spacing: Row to Row 90-120 cm for Pole Bean & 60-75 cm for other beans, Plant to Plant 30-45 cm for Pole Bean & 20-30 cm for other beans.	दूरी: पंक्ति से पंक्ति की दूरी पोल बीन के लिए 90-120 सेमी और अन्य बीन्स के लिए 60-75 सेमी, पौधे से पौधे की दूरी पोल बीन के लिए 30-45 सेमी और अन्य बीन्स के लिए 20-30 सेमी।
Harvest	Harvest the fruit at the time of tender pods. Picking starts by 60 days after sowing –depending on season / climate. Picking is done generally at an interval of 10 – 12 days.	फलों की कटाई कोमल फलियों के समय करें। मौसम/जलवायु के आधार पर, बुवाई के 60 दिन बाद तुड़ाई शुरू हो जाती है। तुड़ाई आमतौर पर 10-12 दिनों के अंतराल पर की जाती है।
Expected Average Yield	Average yield: 8-10 MT for pole beans & 6-7 MT for other beans per acre (depending on season and cultural practice).	औसत उपज: पोल बीन्स के लिए 8-10 मीट्रिक टन और अन्य बीन्स के लिए 6-7 मीट्रिक टन प्रति एकड़ (मौसम और कृषि पद्धति पर निर्भर करता है)।
Nutrient Management	Total N:P:K requirement @ 80:20:20 kg per acre. Dose & Timing: Basal Dose: Apply 50% N and 100% P, K as basal dose during final land preparation. Top Dressing: 50% N at 30 days after sowing.	कुल नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटेशियम की आवश्यकता 80:20:20 किग्रा प्रति एकड़। मात्रा एवं समय: आधारभूत मात्रा: अंतिम भूमि तैयारी के दौरान 50% नाइट्रोजन और 100% फास्फोरस, पोटेशियम की आधारभूत मात्रा डालें। टाप ड्रेसिंग: बुवाई के 30 दिन बाद 50% नाइट्रोजन डालें।
Pest & Disease management	For effective Disease & Pest control apply fungicide as per recommendation from the Department of Agriculture (plant protection) to control Damping off, Downey Mildew and other fungal diseases. Apply recommended insecticide to control sucking pest, fruit fly and any other insects.	प्रभावी रोग एवं कीट नियंत्रण के लिए, कृषि विभाग (पौध संरक्षण) की अनुशंसा के अनुसार डैम्पिंग ऑफ, डाउनी मिल्ड्यू और अन्य कवकीय रोगों को नियंत्रित करने के लिए कवकनाशी का प्रयोग करें। चूषक कीट, फल मक्खी और अन्य कीटों को नियंत्रित करने के लिए अनुशंसित कीटनाशक का प्रयोग करें।
Weed Control - Chemicals with doses and timing	Timely weed removal is very important, need based hand weeding can be done to ensure healthy crop.	समय पर खरपतवार निकालना बहुत महत्वपूर्ण है, स्वस्थ फसल सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकतानुसार हाथ से निराई की जा सकती है।
Irrigation Schedule	Irrigation Frequency Depends upon - A. Soil type: Light soils need more frequency. Heavy soils needs less frequency. B. Crop stage: Vegetative stage: maintain adequate moisture for development of roots. Flowering & fruiting - frequent and shallow irrigation. Harvesting - gradually reduce irrigation during harvesting. C. Growing season: Summer — requires frequent irrigation. Winter — As against Summer season, in winter the irrigation frequency is longer. Rainy — very less frequency depending up on soil moisture.	सिंचाई की आवृत्ति इस पर निर्भर करती है - क. मिट्टी का प्रकार: हल्की मिट्टी में अधिक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। भारी मिट्टी में कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। ख. फसल अवस्था: वानस्पतिक अवस्था: जड़ों के विकास के लिए पर्याप्त नमी बनाए रखें। पुष्पन और फलन - बार-बार और उथली सिंचाई करें। कटाई - कटाई के दौरान सिंचाई धीरे-धीरे कम करें। ग. उगने का मौसम: ग्रीष्मकाल - बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। शीतकाल - ग्रीष्मकाल की तुलना में, शीतकाल में सिंचाई की आवृत्ति अधिक होती है। वर्षाकाल - मिट्टी की नमी के आधार पर बहुत कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।